UG B Sem
23 April

(1)

(a) पेशों को चुनने की स्वतंत्रता नहीं है :- अपने परम्परागत पेशों को छोड़ कर दलितों को पहले यह अधिकार नहीं था, कि वे ऊँची जातियों के पेशों को स्वतंत्रता पूर्वक चुन सकें। अस्पृश्यता की भावना के कारण आभी तक हाल में इन्हें सब तरह की पेशों को करने की छूट नहीं थी। इस निर्योग्यता के कारण इन जातियों की आर्थिक स्थिति आज भी बहुत दैनिय है। वे निर्धनता से सम्बन्धित सभी कष्टों को झेल रही हैं।

(b) भूमि हीन कृषक :- भारत के अधिकतर भाग में खेती करना ऊँची जातियों का एकाधिकार माना जाता है। इस कारण यह नहीं हो सकता है, कि दलितों का भूमि पर अधिकार हो। अधिकतर भूमि पर भूमि हीन श्रमिक हैं। कहाँ जाता है, कि यह उनका सौभाग्य होगा। अगर उन्हें ऊँची जाति के लोग उन्हें अपने खेत में काम करने अधिकार दें। जमींदारी प्रथा समाप्त होने के पूर्व इनसे गुलामों की तरह काम लिए जाते थे।

पणिक्कर के अनुसार :- गुलाम कम से कम अपने मालिक कि चल संपत्ति होने के कारण मालिकों से कुछ व्यक्तिगत सम्बन्ध रखते थे और उनकी आर्थिक महत्ता के कारण उनके साथ बर्बरता का व्यवहार अधिक नहीं किया जाता था पर दलितों के लोगों के मामले

Scanned with CamScanner

में इसका भी अभाव था। गाँवों में आज भी स्थिति बेहतर नहीं है।

(C) सबसे कम वेतन :— निसंदेह दलितों के समाज के लिए सबसे आवश्यक और मूल्यावान सेवा करते हैं, परन्तु इस का काम का वेतन उन्हें सबसे कम मिलता है। यहाँ तक भी उनको शरीर ढकने को कपड़ा, और पेट भरने को अन्न नहीं मिलता है। वे आधे पेट खा कर अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

(D) श्रम-विभाजन में निम्नतम स्थान :— फैक्टरी आदि में इनको अच्छे पदों पर काम करने का अवसर भी नहीं मिल पाता है। इन्हें केवल वे ही काम मिलते हैं, जो कोई नहीं करता। योग्यता होने पर भी उचित काम नहीं मिलने से उत्पादन को काफी धक्का पहुंचा है। और इनकी आर्थिक स्थिति गिर जाती है।

* (2) सामाजिक समस्याएँ :— (a) समाज में निम्नतम स्थिति :— अस्पृश्यता की भावना धारणा ने अनुसूचित जनजातियों को समाज में निम्नतम स्थिति प्रदान थी। इसी कारण पहले ऊँचे जातियों के लोगों द्वारा उनके स्पर्श मात्र से ही नहीं बचा जाता था बल्कि उनके दर्शन एंव छाया तक भी उन्हें अपवित्र करती थी। एक मानव का दूसरे मानव द्वारा इतना अपमान उनकी निर्योग्यता को एक कड़वा सच है।

(b) शिक्षा सम्बंधि समस्याएँ :— अनुसूचित जातियों के लड़के, लड़कियों को पहले स्कूल और कॉलेजों में भरती होने से रोका जाता था। उन्हें शिक्षा प्राप्त करने की स्वतन्त्रता नहीं थी इसका फल यह था कि प्रायः सत् प्रतिशत लोग अशिक्षित थे। आज भी इन जातियों शिक्षा का प्रसार अधिक नहीं है। विशेषकर गाँवो में यह समस्याएँ और भी अधिक है।

(c) निवास स्थान :— सम्बंधि समस्याएँ :— अनुसूचित जातियों को प्रायः शहरों में उन मुहल्लों में नहीं रहने दिया जाता है जिनमें ऊँची जाति के लोग रहते हैं। उनके लिए अलग बस्तियाँ हैं। और यह बस्ति गाँव के बाहर होती हैं।

MY SCHOLAR

Scanned with CamScan

(3) **धार्मिक समस्याएँ :** धार्मिक दृष्टिकोण से भी दलितों या जाति उस समस्याओं पहले तक अछूतों को मंदिरों में प्रवेश करने अधिकार नहीं था। कानून द्वारा आज भी इस समस्या को दूर कर दिया है। फिर - भी गाँवों में कहीं -2 यह समस्या दिखाई देती है। इसके अतिरिक्त धार्मिक पुस्तकों को पढ़ने और धार्मिक संस्थाओं संस्कारों में भाग लेने की समस्या थी। अनुसूचित जाति के लोग धार्मिक उपदेशों को सुन नहीं सकते और नहीं समसान घाटों में अपने मुर्दों को जला सकते। ब्राह्मण इनके धार्मिक संस्कारों नहीं करते थे।

(4) अनुसूचित जातियों में ही भेद-भाव को

→ अनुसूचित जातियों का आपस में ही भेद - भाव होना भी एक गंभीर समस्या है। आश्चर्य की बात यह है, कि अनु जातियों में आपस में भी छुआ-छूत की भावना है, जिसके कारण हरिजनों की समस्याएँ और जटिल प्रतित होती है।

प्रो० पाणिक्कर के अनुसार :- अनुसूचित जातियों का भी अपना -2 एक जातियाँ संगठन है और उच्च जातियों की तरह इनमें भी असंख्या उपजातियाँ है, जिनमें से प्रत्येक अपने को श्रेष्ठ प्रमाणित करने का प्रयास करता है। उदा:- चमड़े का काम करने वाली एक जाति, सफाई की काम करने वाली दूसरी जाति से सदैव सामाजिक दूरी बनाए रखती है, और शादी

Scanned with CamScan

विवाह कदापि नहीं करते। इसी निर्योग्यताओं की समस्याओं का एक दूसरा स्वरूप यह है, कि अनुसूचित जातियों के वे लोग शिक्षा, धन सम्पत्ति, उत्तम पेशा, राजनीतिक सत्ता के आदि के मामले में उच्च स्थिति में हैं। अपनी ही जातियों के उन लोगों से सामाजिक मेल-मिलाप खान-पान, शादी-विवाह के मामले में अपने को अलग रखते हैं और उन्हें समानता का दर्जा नहीं देते। इससे अनुसूचित जातियों में श्रेष्ठता एवं हिनता की भावना उत्पन्न होती है। जो अन्नता राष्ट्रीय एकता के लिए एक समस्याएँ बन जाति जाती है।

(5) अन्तर जातियाँ संघर्ष की समस्याएँ :- अनुसूचित जातियों की एक और बड़ी समस्याएँ अन्तर जातियाँ संघर्ष है। यह संघर्ष संख्या, शक्ति या आर्थिक अथवा राजनितिक शक्ति के आधार पर घटित घटित होती है। जिस समुदाय में जिस जाति के लोग अधिक संख्या में है, या तो जो जाति आर्थिक, राजनितिक सत्ता में शक्तिमान है, वे अपने से निर्बल जाति के लोगों को जनजन्म, बल, धन अथवा राज बल से दबाने से का प्रयास करते हैं। और तभी अन्तर जातियाँ संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाति है। प्रो॰ M.N श्री निवास के अनुसार :- यह जरुरी नहीं है, कि प्रमुखता स्थापित करने वाले उच्च जाति के सदस्य हो, वे अनुसूचित जाति के भी सदस्य हो सकते है। डॉ॰ दुबे के अनुसार :- इस प्रकार के संघर्ष उसी अवस्था में संभव है। जब

MY SCHOLAR

Scanned with CamScanner

शक्ति संपन्न जाति में एकता हो।

(6) **चुनाव में हिंसा की समस्याएँ** :- अनुसूचित जातियों के लोगों के सामने लोक सभा, विधानसभा यहाँ तक कि पंचायतों के चुनाव के समय एक विकट समस्या उत्पन्न हो जाती है। विशेषकर गाँवों में आर्थिक एवं राजनीतिक रूप में शक्ति संपन्न जाति के लोगों अनुसूचित के जातियों के लोगों को स्वतंत्रता पूर्वक वोट देने के अधिकार से वंचित करते है और विशेष प्रत्याशि के पक्ष में डरा - धमका कर जबरजस्ति वोट डलवाने के लिए उन पर न न प्रकार का दबाव डालते है उनपर अत्याचार भी करते है ऐसे अवसरों पर खुनी संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है चुनाव के बाद भी अनुसूचित जातियों को भी गंभीर परिणाम भुगते पड़ते है।

(7) **अन्य जातियों द्वारा अत्याचार एवं उत्पीड़न की समस्याएँ** :- पहले हरिजनों पर अनेक समस्याएँ लाद कर उन पर असंख्या अन्याय एवं अत्याचार होते थी पर यह आशा कि जाती थी, कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संवैधानिक तौर पर उन्हें समान अधिकार मिल जाने के बाद उनका उत्पीड़न खत्म जाएगा पर वास्तव में ऐसा हुआ नहीं उन पर अत्याचार एवं उत्पीड़न करने वाला ऊँच जाति का ही हो।

MY SCHOLAR

Scanned with CamScanner